लोकमत समाचार
पुणे गुरुवार 22 मई 2014

* लोकमत समाचार द्वारा सभा के स्थापना दिन के शुभ अवसर पर आमंत्रित आलेख

# हजारों अध्यापकों को गढ़ने वाली संस्था

## महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा सभा, पुणे के स्थापना दिवस पर विशेष

**22 मई को 'महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा सभा, पुणे' का स्थापना दिवस है. इस संस्था ने अपना अमृत महोत्सवी वर्ष पूर्ण कर शताब्दी महोत्सवी वर्ष की ओर अग्रसर है. इस उपलक्ष्य में संस्था की विकासोन्मुख ऐतिहासिक यात्रा पर यह आलेख प्रस्तुत है. इसमें महाराष्ट्र में हिंदी के प्रचार-प्रसार में सभा के योगदान को अधोरेखित किया है.**

'महाराष्ट्र' भारतवर्ष का एक हिंदीतर भाषी राज्य है. इतिहास इस बात का साक्षी है कि इस राज्य ने सदैव राष्ट्रीय एकता, समाज सुधार और शिक्षा सुधार में अपनी अहम भूमिका का निर्वाह किया है. हिंदी देश की एकमात्र ऐसी भाषा है जो राष्ट्रीयत्व की प्रतीक और देश को एकसुत्र में बांधकर रखने की क्षमता रखती है. महाराष्ट्र के प्रमुख नेता लोकमान्य तिलक और वि. दा. सावरकर हिंदी के समर्थक थे. स्वतंत्र्यपूर्व काल में हिंदी का प्रचार-प्रसार साधु संन्यासियों, संतों और आम जनता द्वारा होता रहा. स्वतंत्रता संग्राम की भी प्रमुख भाषा हिंदी ही रही है.

महात्मा गांधी जी चाहते थे कि देश की राष्ट्रभाषा हिंदी हो. गांधी जी से प्रेरणा लेकर देशभर में हिंदी सेवी संस्थाओं की स्थापना हुई. 'नागरी प्रचारिणी सभा, काशी' (1893) प्रथम हिंदी सेवी सस्था मानी जाती है. तद्नतर इस क्षेत्र की उल्लेखनीय संस्थाओं में 'हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग' (1910) की स्थापना हुई. महात्मा गांधी जी की अध्यक्षता में वर्ष 1918 को इंदौर अधिवेशन संपन्न हुआ जिसमें 'दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, मद्रास' का सूत्रपात किया गया. वर्ष 1935 में दूसरा अधिवेशन हुआ जिसमें दक्षिण भारत को छोड़कर अन्य हिंदीतर प्रदेशों में हिंदी प्रचार की भूमिका बनाई गई और वर्ष 1936 में 'राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा' की स्थापना की गई.

22 मई, 1937 को महाराष्ट्र में 'अखिल महाराष्ट्र हिंदी प्रचार समिति' की स्थापना की गई. इसी संस्था के स्व. शंकरराव देव, स्व. दत्तो वामन पोतदार एवं स्व. गो. प. नेने आदि ने 'महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा सभा' की स्थापना की. हजारों अध्यापकों को गढ़ने वाली संस्था 'महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा सभा, पुणे' गांधी जी की भाषा नीति के अनुसार कार्य करने वाली प्रमुख संस्था है.

### महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा सभा, पुणे :

वर्ष 1945 से महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा सभा, पुणे की हिंदी के प्रचार-प्रसार में सक्रिय भूमिका रही है. श्रद्धेय एसएम जोशी और श्रद्धेय मोहन धारिया जैसे दिग्गज सभा के अध्यक्ष रह चुके है.

हिंदी प्रचार शिक्षण : महाराष्ट्र में हिंदी प्रचार कार्य को गति देने के लिए और हिंदी प्रचारकों की आवश्कता को ध्यान में रखते हुए सभा द्वारा 'हिंदी शिक्षक सनद' पाठ्यक्रम चलाया गया. अनेक शिक्षक प्रचारकों की नियुक्ति की गई और इन प्रचारकों के माध्यम से पुणे, दादर, घाटकोपर, धुलिया, म्हापसा आदि जगहों पर विद्यालय खोले गए. सभा द्वारा हिंदी की अनेक परीक्षाओं का आयोजन होता रहा है, वे इस प्रकार है- राष्ट्रभाषा बालबोधिनी, राष्ट्रभाषा प्राथमिक, राष्ट्रभाषा प्रवेशिका, राष्ट्रभाषा सुबोध, राष्ट्रभाषा प्रबोध, राष्ट्रभाषा प्रवीण, राष्ट्रभाषा पंडित, राष्ट्रभाषा पद्म, नागरी लिपि परिचय, उर्दू लिपि परिचय (पहली), उर्दू लिपि परिचय (दूसरी), राष्ट्रभाषा संभाषण योग्यता, राष्ट्रभाषा व्याख्यान योग्यता, अनुवाद पंडित (लिखित), अनुवाद पंडित (मौखिक), राष्ट्रभाषा व्यवहार योग्यता आदि.

सभा द्वारा प्रकाशित कार्य विवरण वार्षिकी (1 अप्रैल, 2011 से 31 मार्च, 2012) के अनुसार इन परीक्षाओं में बैठने वाले परिक्षार्थियों की संख्या लगभग 82,198 है. इन परीक्षाओं के अतिरिक्त सभा द्वारा संस्कार परीक्षाओं का भी आयोजन किया जाता है. छात्रों को महापुरुषों की जीवनियों से परिचित कराना, प्रेरणा देकर संस्कारी नागरिक बनाना, इन परीक्षाओं के उद्देश्य रहे हैं. इन परीक्षाओं के अतिरिक्त पुणे में हिंदी की दृढ नींव रखने हेतु पुणे कैम्प में 10 जून 1955 से 'सुनील राठौड़ पूर्व प्राथमिक विद्यालय', 'सरस्वति निकेतन हिंदी प्राथमिक विद्यालय' और 'एसएम जोशी माध्यमिक विद्यालय' चलाए जाते हैं. इन तीनों विद्याशालाओं के एकत्रित रूप को 'राष्ट्रभाषा विद्या संकुल' के नाम से जाना जाता है. इस विद्यासंकुल के वर्तमान अध्यक्ष डॉ. अशोक कामत हैं.

सभा के केंद्रवर्ति कार्यालय में 'राष्ट्रभाषा महाविद्यालय' अवस्थित है. यहां पर सभा द्वारा आयोजित परीक्षाओं के वर्ग चलाए जाते थे. सभा द्वारा प्रतिवर्ष कुछ पुरस्कारों का वितरण किया जाता है. सभा द्वारा अलग-अलग परीक्षाओं हेतु वर्षभर में कुल 37 पुरस्कार दिए जाते हैं. पुणे में हिंदी साहित्य के वातावरण की निर्मिति में सहायक 'ज्ञानदा' नामक विशेष संगोष्ठी बैठक वर्ष 1964 से कार्यरत है. 'ज्ञानदा' साहित्य एवं कला मंच की स्थापना के पीछे डॉ. भगीरथ मिश्र, डॉ. प्रभुदास भूपटकर, स्व. हरिनारायण व्यास और सभा के तत्कालीन ग्रंथपाल प्रभाकर स्वामी का विशेष योगदान रहा है. लगभग 40 वर्षों से कार्यरत 'ज्ञानदा' के अंतर्गत 500 के करीब अलग-अलग कार्यक्रमों का संयोजन किया गया है. इसके आज तक के प्रमुख संयोजकों में-स्व. प्रभाकर स्वामी जी, विश्वदास, प्रा. शैलजा माइंके, प्रा. नीला महाडिक, डॉ. नीलिमा परांजपे के नाम अग्रणी कहे जा सकते हैं. इन दिनों डॉ. नीला बोर्वणकर 'ज्ञानदा' का कार्यभार संभाल रही है. इस प्रमुख प्रवृत्ति के संचालक डॉ. प्रभुदास भूपटकर थे और उनके बाद प्रा. सु. मो. शहा सर अनेक वर्षों से संचालक रहे हैं.

### सभा का समृदध ग्रंथालय

सभा द्वारा अनेक प्रकार की प्रतियोगिताओं का आयोजन होता रहा है. वर्ष 1962 से 'अंतर्राज्यीय वक्तृत्व प्रतियोगिता', वर्ष 1963 से 'पश्चिम भारत हिंदी निबंध प्रतियोगिता' और वर्ष 1967 से 'हिंदी एकांकी प्रतियोगिता' का आयोजन होता रहा है. सभा का एक समृदध ग्रंथालय है, जिसे 'केंद्रीय राष्ट्रभाषा ग्रंथालय' के नाम से जाना जाता है. इस ग्रंथालय में हिंदी की विविध विधाओं की शोधपरक और स्पर्धात्मक परीक्षाओं की पुस्तकें उपलब्ध हैं. मार्च 2012 के कार्य विवरण के अनुसार कुल 43,786 पुस्तकें इस ग्रंथालय में संगृहीत है. ग्रंथालय से जुड़े वाचनालय में हिंदी की लगभग 50 पत्रिकाएं नियमित आती है. इस ग्रंथालय से विश्वविद्यालयीन शोध-छात्र तथा हिंदी प्रेमी लाभान्वित होते हैं. वर्तमान में ग्रंथपाल प्रदीप जोशी अध्येता एवं शोधार्थियों की सेवा में कार्यरत है. केंद्रीय ग्रंथालय के अतिरिक्त 'स्वामी रामानंद तीर्थ हिंदी, मराठी ग्रंथालय (सेलू)', 'साने गुरुजी वाचन ग्रंथालय (धुलिया)' तथा मुंबई, नागपुर, औरंगाबाद, अहमदनगर, नांदेड, कोल्हापुर आदि प्रमुख शहरों में सभा के विभागीय ग्रंथालय विद्यमान हैं. सभा द्वारा संचालित 'पुस्तक भांडार' लक्ष्मी रस्ता पर विद्यमान है.

सभा का 'प्रकाशन विभाग' भी हिंदी के प्रचार-प्रसार में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करता है. सभा ने इस प्रकाशन विभाग द्वारा लगभग 350 पुस्तकों का प्रकाशन किया है. इन पुस्तकों के अलावा सभा द्वारा साहित्यिक एवं समीक्षात्मक मुखपत्रिका 'राष्ट्रवाणी' (द्वैमासिक) तथा 'हमारी बात' नामक मासिक पत्रिका का नियमित रूप से प्रकाशन होता है. इस प्रकार राष्ट्रभाषा सभा, पुणे का स्थापना से लेकर आज तक हिंदी के प्रचार-प्रसार में अपूर्व प्रदेय रहा है. लोकमान्य तिलक और महात्मा गांधी के आशीर्वाद सभा को मिलते रहे. सभा में कार्यरत आज तक के सभी पदाधिकारी, कर्मचारी वर्ग, हिंदी प्रचारक और सभा से जुड़े हिंदी सेवियों का भी इस स्वभाषा की समृद्धि में उल्लेखनीय योगदान रहा है. उपर्युक्त विश्लेषित कार्यवृत्तांत इस बात का प्रमाण है कि हिंदी भाषा एवं साहित्य की समृद्धि में इस संस्था की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है. इसकी पुष्टि सभा के वर्तमान अध्यक्ष प्रा. सु. मो. शहा सर के इस उद्धरण से की जा सकती है-पचास वर्ष पूर्व लगाए गए 'सभा' के इस छोटे से पौधे ने आंधी-तूफान, गर्मी-बाढ़, सभी प्रकार के आघात सहते हुए अपनी आंतरिक शक्ति, जिजीविषा, विकसित होने की प्रबल इच्छा के बल पर आज एक विशाल वृक्ष का रूप धारण किया है.

**शिराज हसन शेख**, शोध छात्र,
पुणे विश्वविद्यालय, पुणे.